अध्याय - 04

मानव बस्तियाँ

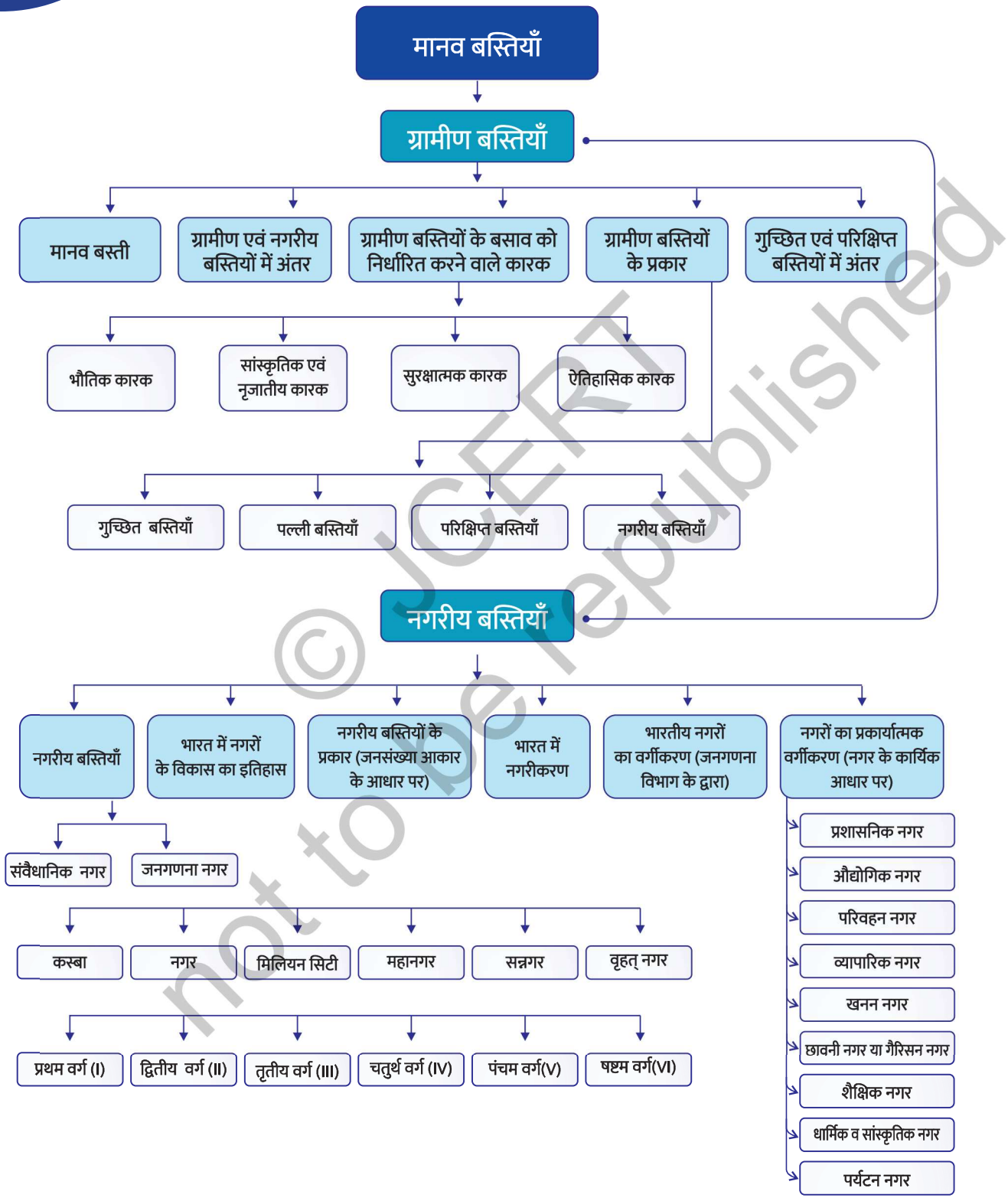

© JCERT not to be republished

ग्रामीण एवं नगरीय बस्तियों में अंतर

अंतर का आधार	ग्रामीण बस्तियाँ	नगरीय बस्तियाँ
व्यवसाय	ग्रामीण बस्तियों में रहने वाले लोग कृषि, पशुपालन आदि जैसे व्यवसाय में लगे होते हैं।	नगरीय बस्तियों में रहने वाले लोग उद्योग, व्यापार, वाणिज्य, परिवहन और सेवाओं आदि जैसे द्वितीयक, तृतीयक एवं चतुर्थक व्यवसायों में लगे होते हैं।
आकार	यह बस्तियाँ अपेक्षाकृत छोटी होती है, इनमें घरों की संख्या कम होती है।	यह बस्तियाँ अपेक्षाकृत बड़ी होती है, इनमें घरों की संख्या अधिक होती है।
विस्तार	ग्रामीण बस्तियों का विस्तार ज्यादातर क्षैतिज होता है। यहां बहुमंजिला इमारतों या मकानों की संख्या कम देखने को मिलते हैं।	नगरीय बस्तियों का विस्तार क्षैतिज के साथ-साथ ऊर्ध्वाधर या लंबवत् भी होता है अर्थात यहां बहुमंजिला इमारतों या मकानों की संख्या अधिक देखने को मिलती है।
जनसंख्या	इन बस्तियों में कम जनसंख्या देखने को मिलती है।	इन बस्तियों में अधिक जनसंख्या देखने को मिलती है, इनकी जनसंख्या कम से कम 5000 होनी चाहिए।
जनघनत्व	इन बस्तियों का जनघनत्व काफी कम होता है।	इन बस्तियों का जनघनत्व काफी अधिक होता है।
पूरक	ग्रामीण बस्तियाँ नगरीय बस्तियों को कच्चा माल तथा खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराती है।	नगरीय बस्तियाँ वस्तुओं तथा सेवाओं को न केवल अपने लिए पैदा करती है, बल्कि इन्हें ग्रामीण क्षेत्रों को भी प्रदान करते हैं।
रोजगार के अवसर	ये बस्तियाँ रोजगार के कम अवसर प्रदान करते हैं, फलत: बड़ी जनसंख्या का पालन पोषण नहीं कर सकते हैं।	ये बस्तियां रोजगार के अधिक अवसर प्रदान करते हैं, फलत: बड़ी जनसंख्या का पालन पोषण कर सकते हैं।
आधारभूत संरचना	ग्रामीण बस्तियों में आधुनिक अस्पताल, शिक्षण संस्थान, मनोरंजन के साधन, टेलीफोन,बिजली, पेयजल जैसी आधारभूत सुविधाएं बहुत कम होती हैं।	नगरीय बस्तियों में आधारभूत सुविधाएँ बहुत अधिक होती है,फलत: लोगों का झुकाव नगरों की ओर अधिक होता है।
सामाजिक संबंध	ग्रामीण बस्ती में रहने वाले लोग कम गतिशील होते हैं, इसलिए उनमें समाजिक संबंध घनिष्ठ होते हैं।	नगरीय बस्ती में रहने वाले लोगों का जीवन । जटिल और तीव्र होता है ,इसलिए उनके समाजिक संबंध औपचारिक होते हैं ।

© JCERT not to be republished

ग्रामीण बस्तियों के बसाव को निर्धारित करने वाले कारक

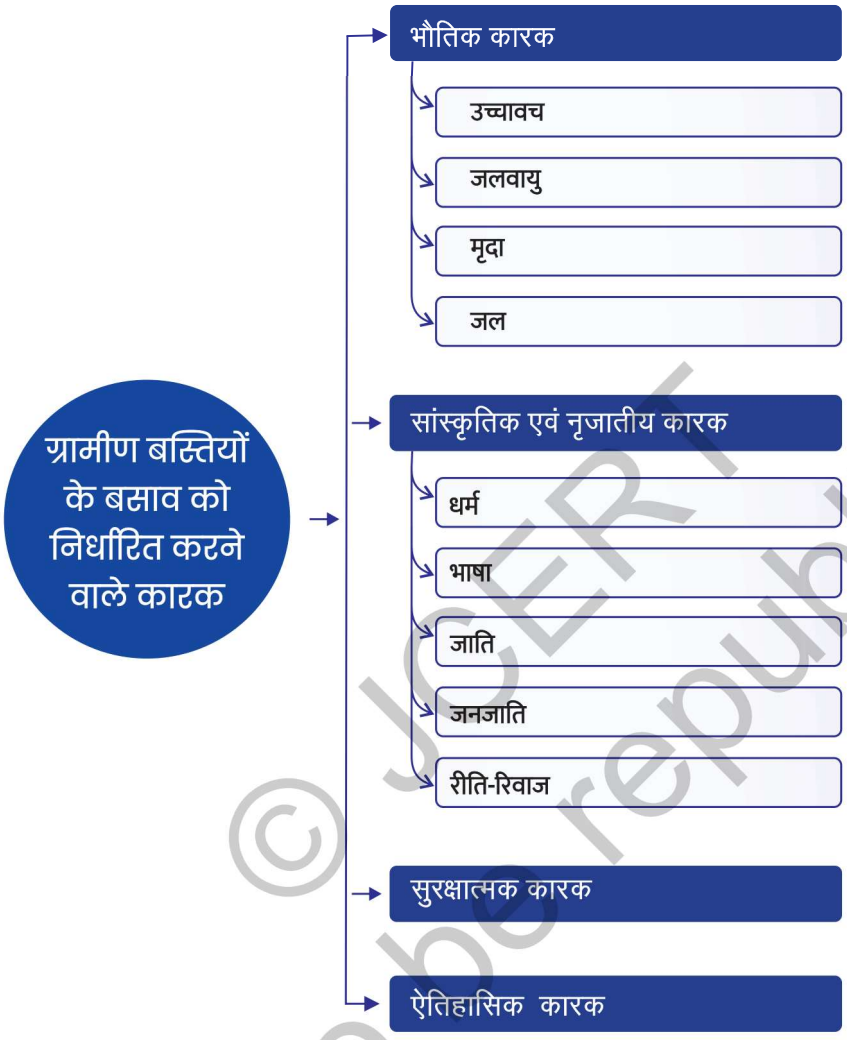

© JCERT not to be republished

ग्रामीण बस्तियों के प्रकार (निर्मित क्षेत्र के विस्तार तथा घरों के बीच की दूरी के आधार पर) :

ग्रामीण बस्तियों के प्रकार

- **गुच्छित बस्ती**
  - गुच्छित बस्तियों को सघन बस्तियाँ या केंद्रीय बस्तियाँ के नाम से भी जानते हैं।
  - इन बस्तियों में घरों का समूह बहुत नजदीक- नजदीक होता है।
  - गुच्छित बस्तियाँ सामान्यतः अत्यंत उपजाऊ जलोढ़ मैदानों एवं शिवालिक घाटियों आदि में पाई जाती है।
- **अर्द्धगुच्छित बस्ती**
  - अर्द्धगुच्छित बस्तियों को विखंडित बस्तियों के नाम से भी जानते हैं।
  - अर्धगुच्छित बस्तियाँ, परिक्षिप्त बस्तियों के किसी सीमित क्षेत्र में गुच्छित होने की प्रवृत्ति का परिणाम है। इन बस्तियों का विकास सामान्यतः किसी बड़े गांव में समाज का कोई वर्ग किसी कारण से मुख्य गांव से थोड़ा दूर रहने लग जाने से होता है।
  - यह बस्तियाँ मुख्यतः गुजरात तथा राजस्थान के कुछ भागों में पाई जाती है।
- **पल्ली बस्तियाँ**
  - पल्ली बस्तियों को पुरवे, टोला, पन्ना, पाढा, नंगला या ढाणी आदि स्थानीय बस्तियों के नाम से भी जानते हैं।
  - वे बस्तियाँ जो किसी बड़े गांव से अलग छोटे-छोटे समूहों में बस जाती है, लेकिन वे उसी बड़े गांव का ही हिस्सा होती है।
  - ये बस्तियाँ छत्तीसगढ़ एवं हिमालय के निचली घाटियों में पाई जाती है।
- **परिक्षिप्त बस्तियाँ**
  - परिक्षिप्त बस्तियों को एकाकी या विकेंद्रीकृत बस्तियों के नाम से भी जाना जाता है।
  - इस प्रकार की बस्तियों के विकास के लिए ज्यादातर प्रतिकूल भौगोलिक परिस्थितियाँ जिम्मेदार है। एकाकी बस्तियों के प्रत्येक घर में केवल एक परिवार ही रहता है, किंतु यह संभव है कि उस परिवार का कोई नौकर या श्रमिक उसी मकान के किसी भाग में अथवा पृथक रूप से एक कमरा बना कर रह सकता है।
  - ये बस्तियाँ छत्तीसगढ़ एवं हिमालय के निचली घाटियों में पाई जाती है।

© JCERT not to be republished

गुच्छित एवं परिक्षिप्त बस्तियों में अंतर

अंतर का आधार	गुच्छित बस्तियाँ	परिक्षिप्त बस्तियाँ
बसावट क्षेत्र	गुच्छित बस्तियाँ उपजाऊ मैदानों या नदी घाटियों में पाई जाती है।	परिक्षिप्त बस्तियाँ पर्वतीय या उच्च भूमि एवं शुष्क व अर्द्धशुष्क मरुस्थलो में पाई जाती है।
व्यवसाय	यह बस्तियाँ अपेक्षाकृत छोटी होती है, इनमें घरों की संख्या कम होती है।	इन बस्तियों में मकान एक - दूसरे से सटे हुए तथा छोटे होते हैं ।
मकानों के बीच की दूरी	इन बस्तियों में मकान एक - दूसरे से सटे हुए तथा छोटे होते हैं ।	इन बस्तियों में मकान एक दूसरे से काफी दूर तथा खुले होते हैं।
आकार	यहाँ के खेत छोटे-छोटे होते हैं।	इन बस्तियों में अधिक जनसंख्या देखने को मिलती है, इनकी जनसंख्या कम से कम 5000 होनी चाहिए।
जीवन की प्रकृति	इन बस्तियों के निवासी सुरक्षा तथा कृषि का कार्य मिल- जुलकर करते हैं।	यहाँ की बस्तियाँ अधिक जनसंख्या घनत्व एवं मकान एक-दूसरे से सटे होने के कारण गंदे होते हैं।
साफ- सफाई	यहाँ की बस्तियाँ अधिक जनसंख्या घनत्व एवं मकान एक- दूसरे से सटे होने के कारण गंदे होते हैं।	यहां की बस्तियाँ कम जनसंख्या घनत्व एवं मकान एक- दूसरे से दूर रहने के कारण साफ-सुथरे एवं प्राकृतिक होते हैं।

© JCERT not to be republished

नगरीय बस्तियाँ
(भारतीय जनगणना विभाग के द्वारा) :-

भारतीय जनगणना विभाग के द्वारा नगरीय बस्ती को निम्न रूप में परिभाषित करते हुए दो प्रमुख नगरों की पहचान की है -1. संवैधानिक नगर 2. जनगणना नगर

संवैधानिक नगर

वे सभी स्थान जिनमें नगरपालिका या नगर निगम या कैंटोनमेंट बोर्ड (छावनी बोर्ड) या नोटिफाइड टाउन एरिया कमेटी (अधिसूचित नगरी क्षेत्र समिति) है संवैधानिक नगर कहलाते हैं।

जनगणना नगर

जनगणना नगर कहलाने के लिए तीन शर्तों का होना आवश्यक है-
1. जनसंख्या कम से कम 5000 होनी चाहिए।
2. 75 % कार्यशील पुरुष जनसंख्या गैर कृषि कार्यों में संलग्न होनी चाहिए।
3. जनसंख्या का घनत्व कम से कम 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर होना चाहिए।

नगर

प्राचीन नगर
- अधिकांशतः नगर धार्मिक व सांस्कृतिक केंद्रों के रूप में विकसित।
- प्रमुख उदाहरण- वाराणसी, प्रयागराज, पाटलिपुत्र, मथुरा, मदुरै आदि।

मध्यकालीन नगर
- अधिकांशतः नगर रियासतों और राज्यों के मुख्यालय या राजधानियों के रूप में विकसित।
- प्रमुख उदाहरण - दिल्ली, हैदराबाद, जयपुर, लखनऊ, आगरा, नागपुर आदि।

आधुनिक नगर
- अंग्रेजों तथा अन्य यूरोपवासियों द्वारा व्यापारिक केंद्र व प्रशासनिक केंद्र के रूप में विकसित।
- प्रमुख उदाहरण - सूरत, दमन, गोवा, पांडिचेरी, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता आदि।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात विकसित नगर चंडीगढ़, भुवनेश्वर, दुर्गापुर, राउरकेला, भिलाई, सिंदरी, बरौनी इत्यादि ।

© JCERT not to be republished

भारतीय नगरों का वर्गीकरण (जनगणना विभाग के द्वारा)

भारत सरकार के जनगणना विभाग के द्वारा भारतीय नगरों को जनसंख्या आकार के आधार पर प्रमुख 6 वर्गों में वर्गीकृत किया है -

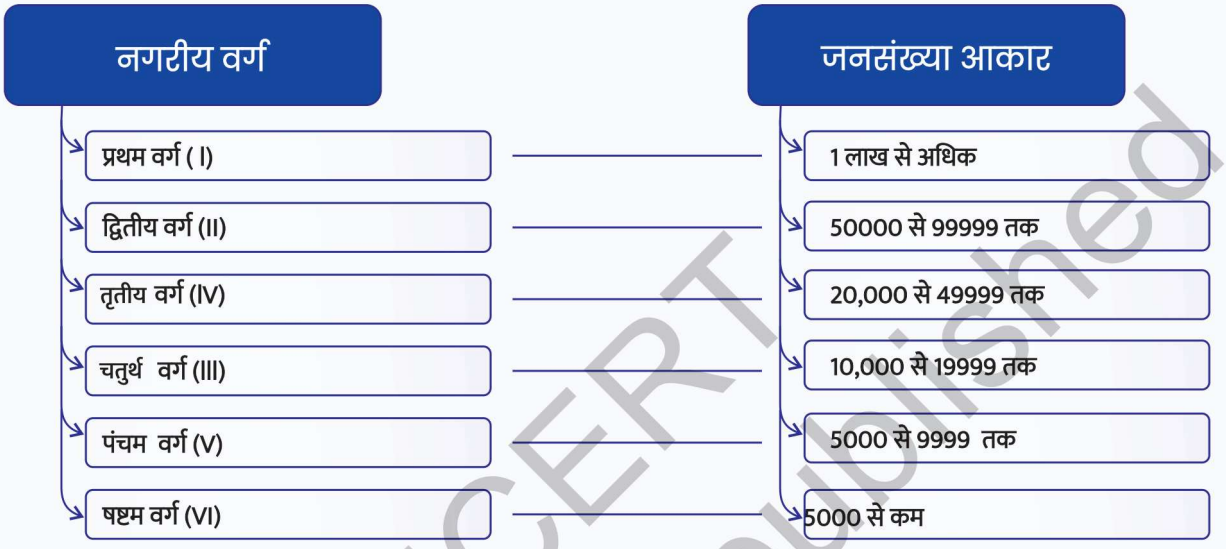

© JCERT not to be republished

भारतीय नगरों का प्रकार्यात्मक वर्गीकरण (नगर के कार्य के आधार पर):-

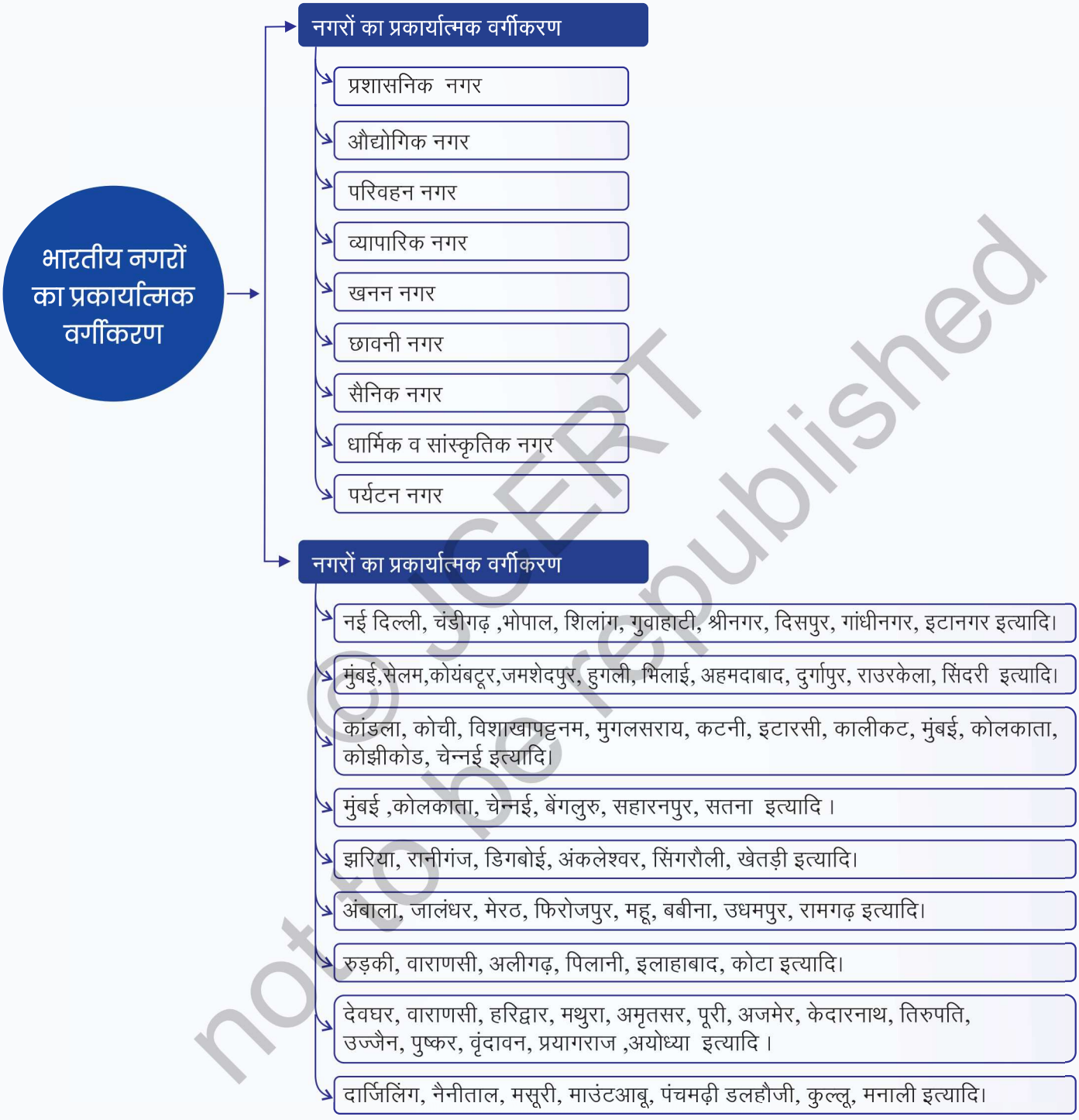

© JCERT not to be republished

ऊपर वर्णित विशेषीकृत नगर भी महानगर बनने पर बहुप्रकार्यात्मक बन जाते हैं, जिनमें उद्योग ,व्यापार ,व्यवसाय, प्रशासन ,परिवहन इत्यादि महत्वपूर्ण हो जाते हैं । प्रकार्य इतने अंतर संबंधित हो जाते हैं कि नगर को विशेष प्रकार्य वर्ग में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है।

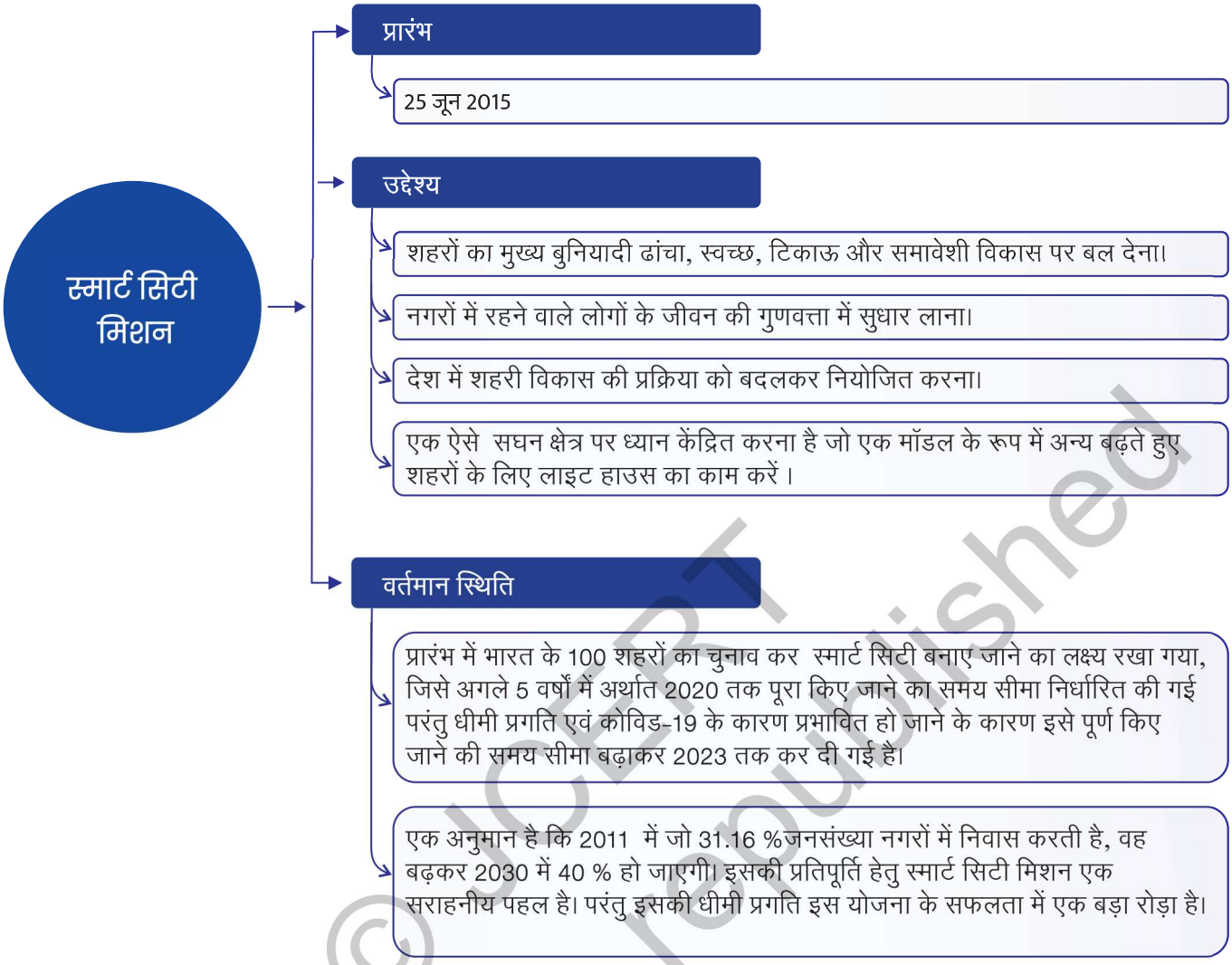

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण स्मरणीय तथ्यः

- गैरिसन नगर को छावनी नगर भी कहते हैं।
- 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की कुल नगरीय जनसंख्या 31.16 %है ।
- भारत के 3 बड़े मेगानगर क्रमशः मुंबई , दिल्ली एवं कोलकाता है।
- सन्ननगर शब्दावली का सर्वप्रथम प्रयोग पैट्रिक गिडिज ने किया था।
- मेगालोपोलिश शब्दावली का प्रयोग सर्वप्रथम जीन गोटमैन ने किया था ।

उत्तर- (क) मुंबई नगरीय समूहन ।

© NCERT not to be republished